



बच्चों के मनोवैज्ञानिक कल्याण परमाता-पता केपालन-पोषणकेप्रभावों का अध्ययन

SHALU TIWARI

Research Scholar, OPJS University, Churu Rajasthan

SHOWKET AHMAD WANI

Assistant Professor, OPJS University, Rajasthan Churu Rajasthan

सारांश

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना है कि बच्चों के पालन-पोषण को कैसे समझते हैं, सामाजिक-जनसांख्यिकीय विशेषताएं कशोरों की कथत पारिवारिक शैली और मनोवैज्ञानिक कल्याण को कैसे प्रभावित करती हैं, शहरी और ग्रामीण कशोर बच्चों के मनोवैज्ञानिक कल्याण पर कथत पारिवारिक शैलियों का प्रभाव और लड़कों और लड़कियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण पर पालन-पोषण का प्रभाव। इन बच्चों का चयन समावेशन और बहिष्करण मानदंडों के आधार पर यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक के माध्यम से किया गया था। सभी प्रतिभागियों का मूल्यांकन पारिवारिक स्टाइल स्केल और रायफ के स्केल ऑफ साइकोलॉजिकल वेल-बीइंग (आरएसपीडब्लूबी) का उपयोग करके किया गया था। कशोर बच्चे अपनी माताओं को अस्वीकार करने वाले, लापरवाह, कृतज्ञ, यथार्थवादी, उदार मानकों और अनुशासन वाले मानते हैं। वे अपने पता को स्वीकार करने वाले, सुरक्षात्मक, कृपालु, यथार्थवादी, नैतिकता और अनुशासन रखने वाले मानते हैं। लड़कियों और लड़कों के अपने माता-पता को देखने के तरीके में महत्वपूर्ण अंतर है। शहरी और ग्रामीण कशोर बच्चों के अपने माता-पता को देखने के तरीके में महत्वपूर्ण अंतर है। केवल पर्यावरणीय महारत और व्यक्तिगत विकास - PWB के उप-वर्ग सामाजिक-जनसांख्यिकीय विशेषताओं - परिवार के प्रकार और धर्म से प्रभावित होते हैं। लड़कियों की तुलना में लड़कों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है। पता/माता/माता-पता की स्वीकृति का कशोर बच्चों के

मनोवैज्ञानिक कल्याण के प्रत्येक उप-स्तर पर प्रभाव पड़ता है। माता-पिता द्वारा स्वीकृति मनोवैज्ञानिक कल्याण को बढ़ावा देती है और माता-पिता की अस्वीकृति मनोवैज्ञानिक कल्याण को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। कठोर बच्चों में स्वायत्तता के विकास में पिता का प्रमुख योगदान होता है। वैवाहिक संघर्ष और वैवाहिक समायोजन ने कठोर बच्चों के मनोवैज्ञानिक कल्याण में योगदान नहीं दिया है। कठोर बच्चों की मनोवैज्ञानिक भलाई, पालन-पोषण शैलियों के वृद्धि से जुड़ी होती है।

मुख्यशब्द:-बच्चों के पालन-पोषण, माता-पिता के मनोवैज्ञानिक प्रभाव, सामाजिक-जनसांख्यिकीय विशेषताएं, पारिवारिक शैली

प्रस्तावना

बच्चों के अस्तित्व और विकास को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उद्देश्यपूर्ण गतिविधियों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह लैटिन क्रिया 'पारेरे' - 'आगे लाने, बकासत करने या शक्ति करने' से निकला है। शब्द 'पारिवारिक', इसकी जड़ से, विकास और शक्ति करने की गतिविधि से अधिक चर्चित है, जो इसे करता है (क्लार्क और स्टीवर्ट)। शब्द का अर्थ यह है कि पालन-पोषण एक सकारात्मक, पोषण करने वाली गतिविधि है। इस प्रकार, पालन-पोषण एक ऐसी गतिविधि है जिसमें आम तौर पर बच्चे, माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्य आजीवन बातचीत में शामिल होते हैं।

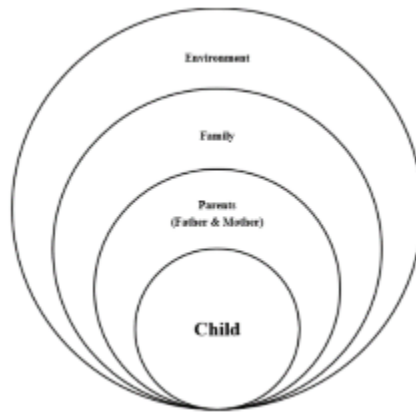
पारिवारिक बच्चों की परवरिश और उन्हें वयस्कता में उनके स्वस्थ विकास को सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा और देखभाल प्रदान करने की प्रक्रिया है। पारिवारिक को केवल "माता-पिता होने की प्रक्रिया या स्थिति" के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। एक बार जब आपका बच्चा हो जाता है, तो आप पालन-पोषण की प्रक्रिया में शामिल हो जाते हैं।

हालांकि, यह इतना आसान नहीं है और मॉरिसन ने पारिवारिक को "बच्चों के लिए योजना बनाने, बनाने, जन्म देने और पालन-पोषण और/या देखभाल प्रदान करने के लिए उपयुक्त ज्ञान और कौशल को बकासत करने और उपयोग करने की प्रक्रिया" के रूप में परिभाषित किया है। इस परिभाषा का अर्थ है कि पालन-पोषण तब शुरू होता है जब इसके लिए कोई योजना होती है

और इसमें न केवल बच्चों का पालन-पोषण होता है बल्कि उनकी देखभाल भी शामिल होती है। बच्चे के जीवन में माता-पिता की सबसे प्रभावशाली भूमिका होती है।

माता-पिता एक बच्चे का पालन-पोषण करते हैं ताकि वह मजबूत और मजबूत बन सके। एक बच्चे का पूरा संसार माता-पिता होता है। बच्चा अपने माता-पिता के माध्यम से दुनिया को देखता है। वे पहले लोग हैं जिनके साथ बच्चा बातचीत करता है और दुनिया और अन्य लोगों के बारे में जानता है। उनके बाद ही परिवार के अन्य लोग बच्चे के जीवन में जगह बनाते हैं। बाद में यह पर्यावरण है जो बच्चे के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पारिवारिक शब्द को माता-पिता होने की प्रक्रिया या स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है , और इसमें विकास के दौरान बच्चे को पोषण, सुरक्षा और मार्गदर्शन करना शामिल है। पारिवारिक शैली माता-पिता के व्यवहार और व्यवहार के एक सेट को संदर्भित करती है जो माता-पिता अपने बच्चों के व्यवहार को प्रबंधित करने के लिए अक्सर संदर्भों में लगातार उपयोग करते हैं , और नियंत्रण, प्रतिक्रिया, गर्मजोशी और दंड के पैटर्न द्वारा निर्धारित किया जाता है।



चित्र 1 - बच्चों की दुनिया

जबकि पारिवारिक शैलियों की कई अवधारणाओं को चित्रित किया गया है , पारिवारिक शैली पर प्रकाशित अधिकांश अध्ययनों ने पारिवारिक प्रदर्शनों की सूची (पावर , 2013) में माता-पिता की जवाबदेही / गर्मजोशी , नियंत्रण / मांग और अनुशासन की मात्रा और गुणों पर ध्यान केंद्रित

क्या है। माता-पता का अपने बच्चों के प्रति रवैया माता-पता का है। एक बच्चा अपने पालन-पोषण की जिम्मेदारियों को माता और पता दोनों को एक साथ या स्वतंत्र रूप से देता है।

पारिवारिक मजदर है - माता-पता अपने बच्चों के माध्यम से अपने बचपन को फर से जी सकते हैं। वे अपनी सारी चंताओं और समस्याओं को भूलकर बच्चों के साथ बच्चे बन जाते हैं। ये वो सब काम करते हैं जो वो बचपन में नहीं कर पाते थे। पारिवारिक दे रहा है - माता-पता ही ऐसे लोग हैं जो बिना कसी अपेक्षा के बिना शर्त प्यार देते हैं। बच्चे उनके जीवन का उद्देश्य बन जाते हैं।

माता-पता अपना जीवन, अनुभव, भौतिक संसाधन और मौद्रिक संसाधन बच्चों को कम से कम उम्मीदों के साथ देते हैं। पारिवारिक मानव जाति की सेवा का सबसे शुद्ध रूप है। पालन-पोषण शक्ति है - जैसा क जेबी वॉटसन ने कहा था , "मुझे एक दर्जन स्वस्थ शशु , अच्छी तरह से गठित, और मेरी अपनी निर्दिष्ट दुनिया दें ता क उन्हें लाया जा सके और मैं कसी भी एक को यादृच्छिक रूप से लेने और उसे कसी भी प्रकार के वशेषज्ञ बनने के लए प्र श क्षत करने की गारंटी दूंगा।

मैं चयन कर सकता हूँ - डॉक्टर , वकील, कलाकार, व्यापारी-प्रमुख और, हाँ, यहाँ तक क भखारी-आदमी और चोर, उसकी प्रतिभा, रु च, प्रवृत्ति, योग्यता, व्यवसाय और उसके पूर्वजों की जाति की परवाह कए बिना। मैं अपने तथ्यों से परे जा रहा हूँ और मैं इसे स्वीकार करता हूँ, ले कन इसके वपरीत के समर्थक भी हैं और वे हजारों सालों से ऐसा कर रहे हैं।

माता-पता की भूमिका

कसी भी माता-पता की अपने बच्चे पर इस तरह की शक्ति होती है। वे बच्चे को बना या बिगाड़ सकते हैं। आमतौर पर बच्चे बिना कसी पूर्व ज्ञान या वचारों के एक खाली स्लेट (तबुला रस) की तरह पैदा होते हैं। यह इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त अनुभव है जो मानव मन को बनाने वाली सामग्री प्रदान करता है (लोके, जॉन 2019)। माता-पता जो चाहें आकर्षित और लख सकते हैं - अच्छा और बुरा दोनों। पारिवारिक का कोई एक निश्चित और व्यापक सद्वांत नहीं है और यह बच्चों के वकास को कैसे आकार देता है , ले कन इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं क बच्चे के

विकास पर पारिवारिक शैली का एक बड़ा प्रभाव है (थेरगांवकर और वाडकर , 2007)। बचपन के वकारों के विकास और रखरखाव का वर्णन करने वाले मॉडल ने माता-पता के व्यवहार (क्लार्क , कूपर, और क्रेस्वेल, 2013) की केंद्रीय भूमिका पर प्रकाश डाला है क्योंकि माता-पता बच्चों के भावनात्मक स्वास्थ्य को आकार देने में काफी भूमिका निभाते हैं , खासकर बचपन के शुरुआती वर्षों के दौरान (गार) , हडसन, और रेपी, 2005)। माता-पता एक ऐसी कला है जो बच्चे को भवष्य के लिए तैयार करने के लिए पता और महिला-माता कहे जाने वाले पुरुष को शक्ति या जिम्मेदारी प्रदान करती है। वे इसे एक साथ या स्वतंत्र रूप से कर सकते हैं लेकिन वे लोग हैं जो बच्चे को समाज और संस्कृति के लिए तैयार करने के लिए इसे अपने ऊपर लेते हैं (वीनेस , 1973 ए)। पारिवारिक के माध्यम से माता-पता बच्चे को विश्वास , अपनेपन, स्वयं और समाज में दूसरों के साथ व्यवहार और बातचीत करने की अवधारणाओं को समझने में सक्षम बनाते हैं। माता-पता बच्चे को जड़ों , निरंतरता और अपनेपन की भावना (सरोही और चौहान , 1991) खोजने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करते हैं और बड़े होने पर समाज के लिए प्रभावी ढंग से सेवा करने के लिए भी मदद करते हैं। माता-पता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बच्चों के व्यवहार को काफी हद तक प्रभावित करते हैं और माता-पता का व्यवहार बच्चे के व्यवहार को आकार देता है। यद्यपि माता-पता बच्चों के प्रति कैसा व्यवहार करते हैं और बच्चों के व्यवहार की गतिशीलता में इसका बहुत महत्व है , इस पर बहुत कम शोध किया गया है कि बच्चे अपने माता-पता की माता-पता की शैली को कैसे देखते हैं (भारद्वाज , 1996)। पारिवारिक स्टाइल से तात्पर्य है कि माता-पता अपने बच्चों की देखभाल कैसे करते हैं। वे वही हैं जो अपने बच्चों को अनुकूल सामाजिक वातावरण देते हैं ताकि वे भावनात्मक रूप से विकसित हो सकें और फल-फूल सकें। माता-पता अपने बच्चों में मानवीय मूल्यों का संचार करते हैं जो बच्चों के लिए बाद में जीवन में बहुत मूल्यवान होते हैं जब उन्हें अपने दम पर समाज का सामना करना पड़ता है। माता-पता मुख्य लोग हैं जो बच्चों को अपने जीवन में सफल होने में सक्षम बनाते हैं (अख्तर जेड, 2012)। सामाजिक और भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर माता-पता के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता है।

डी. बॉमरिंड, 1991 के अनुसार, तीन मुख्य बुनियादी प्रकार की पारिवारिक शैलियाँ हैं - ऑथोरिटिव पारिवारिक, ऑथोरिटेरियन पारिवारिक, और परमेश्वर पारिवारिक। डी. बॉमरिंड, 1991 के अनुसार,

आ धकारिक पालन-पोषण एक ऐसी शैली है जहाँ माता-पता बच्चे को अपने दिमाग में रखते हैं और विशेष रूप से सकारात्मक प्रोत्साहन के माध्यम से बच्चे को फलने-फूलने में मदद करते हैं। अधनायकवादी पालन-पोषण शैली बच्चे को माता-पता द्वारा निर्धारित नियमों और वनियमों का पालन करने की मांग करती है, बिना उनसे सवाल किए। अनुमेय पालन-पोषण शैली को भोगवादी पालन-पोषण या अप्रत्यक्ष या उदार पालन-पोषण शैली के रूप में भी जाना जाता है, जो बच्चों को बहुत अधिक स्वतंत्रता देती है और उन्हें परिवार के नियमों को तय करने देती है। माता-पता भी उनकी सभी मांगों को मानते हैं। अनुमेय माता-पता के बच्चे आवेगी हो सकते हैं (कोनी एम एट अल, 2013)। एक अन्य प्रकार का पालन-पोषण है जिसे उपेक्षित पालन-पोषण के रूप में जाना जाता है (कोप्को के।, 2007)। इस प्रकार का पालन-पोषण कभी भी बच्चे की भावनाओं को महत्व नहीं देता है, हालांकि माता-पता बच्चों को भोजन, कपड़े आदि जैसी बुनियादी जरूरतें प्रदान करते हैं। इन पारिवारिक शैलियों के अलावा, आज हमारे पास कुछ और जोड़े गए हैं जैसे हेलीकॉप्टर पारिवारिक, स्लो पारिवारिक, टॉक्सिक पारिवारिक, डॉल्फिन पारिवारिक अटैचमेंट पारिवारिक, पॉज़िटिव पारिवारिक, नार्सिसिस्टिक पारिवारिक, पारिवारिक का पोषण, ओवर पारिवारिक, आदि। पारिवारिक की ये सभी शैलियाँ अब बच्चे के व्यवहार पर सीधा प्रभाव डालती हैं और जीवन में बाद में बच्चे के भविष्य को प्रभावित कर सकती हैं। हम यह नहीं कह सकते कि कौन सी पारिवारिक शैली सबसे अच्छी है। यह माता-पता, बच्चे और पर्यावरण पर निर्भर करता है। एक ही परिवार में, एक माता-पता की शैली एक बच्चे में एक विशेष व्यवहार को बढ़ावा दे सकती है और वही एक ही परिवार के दूसरे बच्चे के लिए लागू नहीं हो सकती है। हर समय, माता-पता आधिकारिक नहीं हो सकते हैं, कभी-कभी उन्हें लपट होने की आवश्यकता होती है, और कई बार उन्हें सत्तावादी होने की आवश्यकता होती है। तो, यह वृद्धि पारिवारिक शैलियों का संयोजन है जिसे माता-पता को बच्चे का पालन-पोषण करते समय अपनाने की आवश्यकता होती है। पारिवारिक एक सतत प्रक्रिया है, जो उनका अपने बच्चों के प्रति रवैया है। यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि बच्चा अपने पालन-पोषण की जिम्मेदारी अपने माता-पता को देता है। इस लिए, यह माता-पता की जिम्मेदारी बन जाती है कि वे बच्चे के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक विकास के लिए व्यवस्था करें। वे इसे या तो माता और पता के रूप में एक साथ करते हैं या स्वतंत्र रूप से कर सकते हैं। लेकिन प्रत्येक माता-पता का बच्चे

पर अलग-अलग पता या माता के रूप में और माता-पता के रूप में एक साथ प्रभाव पड़ता है। तो, जब हम माता-पता कहते हैं, तो इसका अर्थ है माता और पता। बच्चे के समग्र विकास में माता-पता के रूप में दोनों की अलग-अलग भूमिका होती है। इस अध्ययन का उद्देश्य इस धारणा का अध्ययन करना है कि बच्चे के पास अपने माता-पता के बारे में अलग-अलग माता और पता के रूप में और माता-पता के रूप में एक साथ है।

ये धारणाएँ वह अर्थ हैं जो बच्चा अपने माता-पता के साथ अपने सचेत या अचेतन अनुभवों के कारण देता है। पता के पालन-पोषण की शैली / वधा के बारे में बच्चे की धारणा को फादरिंग के रूप में जाना जाता है और माँ की माता की धारणा को मातृत्व कहा जाता है। भले ही पता और माता दोनों बच्चे के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन प्रत्येक की एक अलग भूमिका होती है। ये भूमिकाएँ कभी-कभी अतिव्यापी होती हैं और कभी-कभी स्पष्ट होती हैं। बच्चा जानता है कि कुछ स्थितियों में पता कैसे प्रतिक्रिया देगा और बच्चे से क्या अपेक्षा की जाती है। माँ के साथ भी ऐसा ही है। बच्चा भी जानता है कि माँ की अपेक्षाएँ क्या हैं। इस लिए पता और माता के रूप में और माता-पता के रूप में भी एक साथ इन भूमिकाओं के बारे में बच्चे की धारणा का अध्ययन करना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है।

पालन-पोषण के घटक:-

मातृत्व :- गर्भाधान से ही बच्चे का सबसे पहला संपर्क माँ ही होता है और वह उसकी मूलभूत आवश्यकताओं का ध्यान रखती है। वह शैशवावस्था के दौरान बुनियादी देखभाल करने वाली बन जाती है और उसके माध्यम से बच्चा ट्रस्ट बनाम अवस्था की अवधारणा सीखता है। बचपन में बच्चा दुनिया को माँ की नज़र से देखता है और अपने आसपास के वातावरण और लोगों के बारे में राय बनाता है। बच्चे के व्यक्तित्व पर उसका बहुत प्रभाव पड़ता है। फारेन और रैमसे , 1977 के अनुसार, माँ बच्चे की कल्पना को आकार देती है और उसे उत्पादक बनाती है। 1965 के केगन के अनुसार , जिस बच्चे को माँ से पर्याप्त भावनात्मक समर्थन मिलता है , वह पारस्परिक संबंधों को बेहतर ढंग से समझता है। माँ बच्चों पर बेहतर नियंत्रण दिखाती है और कम सजा और प्रभुत्व के साथ दोस्ती के लिए खड़ी होती है। लेकिन अगर माँ बच्चे के समुचित विकास के लिए आवश्यक प्यार, स्नेह, देखभाल और वातावरण प्रदान करने में असमर्थ है, तो यह

बच्चे के व्यवहार और वृद्ध को प्रभावित करता है। यह बदले में पर्यावरण के साथ बच्चे की बातचीत को प्रभावित कर सकता है। पता-पता हमेशा से ही महानायक और महाशक्ति के प्रतीक रहे हैं। कोमल हृदय वाला इतना वशाल व्यक्ति पता है। वह वह है जिसकी आंखों से बच्चा बाहरी दुनिया को देखता और समझता है। वह दावे और स्वतंत्रता का प्रतीक है। वह वह व्यक्ति है जो बच्चे में जिज्ञासा को प्रोत्साहित करता है और काफी हद तक बच्चे को दुनिया का सामना करना सिखाता है। पता को परिवार में प्रदाता माना जाता है। पता बच्चे के शारीरिक विकास के लिए प्रदान की जाने वाली सहायता के अलावा लगभग सभी स्थितियों में बच्चे को भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक सहायता प्रदान करता है। वह वह है जो बाहर जाता है , पैसा कमाता है और सभी भौतिक सुखों का प्राथमिक प्रदाता है। बच्चा पता से कर्तव्य और आज्ञाकारिता की अवधारणा सीखता है। बच्चे अपनी आँखों में प्रशंसा के साथ पता की ओर देखते हैं। पता नायक-पूजा होता है और बच्चे के व्यवहार पर उसका बहुत प्रभाव पड़ता है। यहां कोई भी अपर्याप्तता , कुसमायोजन, परित्याग, अपराधबोध, आत्म-अवमूल्यन और निर्भरता और रासायनिक निर्भरता का एक वास्तविक मुख्य कारण हो सकता है। पारिवारिक वह है जो माता-पता अपने बच्चों को देते हैं। बच्चा इसे कैसे लेता है / समझता है और इसका अनुभव पूरी तरह से बच्चे पर निर्भर करता है। हालांकि भारद्वाज एट अल। पालन-पोषण की दो भूमिकाओं को परिभाषित किया है; यह माता-पता दोनों के संयुक्त प्रयास हैं जो बच्चों में सर्वश्रेष्ठ लाते हैं। भारद्वाज एट अल के अनुसार। (1998), व भन्न पारिवारिक शैलियों को मूल रूप से पारिवारिक के व भन्न तरीकों में वर्गीकृत किया जा सकता है। उन्होंने पालन-पोषण के आठ तरीकों की पहचान की है जो इस प्रकार हैं:



चित्र 2 - पारिवारिक तरीका

पालन-पोषण के ये आठ तरीके इस बात की बेहतर समझ देते हैं कि बच्चा अपने माता-पिता की पालन-पोषण शैली को कैसे समझता है। आठ पारिवारिक स्तर में से प्रत्येक को आगे 2 श्रेणियों/आयामों में विभाजित किया गया है। एक आयाम/श्रेणी का बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव माना जाता है और दूसरी श्रेणी/आयाम का बच्चों पर नकारात्मक प्रभाव माना जाता है। स्वीकृति, सुरक्षा, भोग, यथार्थवाद, नैतिकता, अनुशासन, यथार्थवादी भूमिका की अपेक्षाएं और वैवाहिक समायोजन माता-पिता की शैलियों के सकारात्मक आयाम हैं, जबकि अस्वीकृति, लापरवाही, उपेक्षा, काल्पनिक अपेक्षा, उदार मानक, स्वतंत्रता, दोषपूर्ण भूमिका अपेक्षाएं और वैवाहिक संघर्ष नकारात्मक आयाम हैं। पालन-पोषण की शैली से पारिवारिक एक कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया है और माता-पिता भी बच्चों के साथ-साथ परीक्षण-और-त्रुटि पद्धति के माध्यम से सीखते हैं जो उनके बच्चे के लिए सबसे अच्छा काम करता है। यह मुख्य उद्देश्य के साथ किया गया सबसे निस्वार्थ कार्य है कि बच्चा समृद्ध हो और जीवन में बिना किसी कठिनाई और समस्या के आगे बढ़े। माता-पिता से उचित प्यार और देखभाल बच्चे को समृद्ध होने और जीवन में सकारात्मकता और आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ने में मदद करती है।

पारिवारिक और कशोर

बाल कशोरावस्था युवाओं के लिए एक रोमांचक और महत्वपूर्ण अवधि है। जीवन का यह चरण आश्चर्यजनक और कठोर परिवर्तनों से भरा है। यह वह चरण है जहां कशोर बच्चों में भारी शारीरिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन होते हैं। यह जीवन का यह चरण है जहां ये युवा परिवार के सदस्यों विशेष रूप से माता-पिता, दोस्तों, साथियों, शिक्षकों आदि के साथ अपने संबंधों को फिर से काम कर रहे हैं। भारत जैसे देश में, जिसमें 10-19 वर्ष के आयु वर्ग के लगभग 243 मिलियन कशोर रहते हैं। उन्हें उचित मनोवैज्ञानिक और शारीरिक देखभाल प्रदान करना वास्तव में चुनौतीपूर्ण है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत एक विकासशील देश है और प्रत्येक को उचित मनोवैज्ञानिक देखभाल प्रदान करना वास्तव में कठिन है, जब बहुत से ऐसे हैं जिनकी बुनियादी जरूरतें पूरी नहीं होती हैं। लेकिन यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत में 10 से 19 वर्ष के आयु वर्ग के 225 मिलियन कशोर हैं, जो युवा लोगों का सबसे बड़ा समूह है जो वयस्कता में प्रवेश करने के कगार पर है (नाको, 2008)। इन बच्चों को माता-पिता की देखभाल प्रदान करना वास्तव में एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। माता-पिता की देखभाल का तात्पर्य है कि माता-पिता को अनुशासन, नैतिक व्यवहार, और शिक्षा के लिए समर्थन, प्यार, सकारात्मक सम्मान और परिवार के सदस्यों के सम्मान के लिए लगातार तरीके का पालन करने की आवश्यकता है। बच्चे को घर पर जो शुरुआती अनुभव होते हैं, वे बच्चे के जीवन में भविष्य के अनुभवों का आधार बनते हैं। (कपलान और ओवेन्स, 2004)। कशोरों को अपने माता-पिता की आवश्यकता होती है ताकि वे निर्भरता से मुक्त संघों में सुगम संक्रमण को सुगम बना सकें। उन्हें यह भी पता होना चाहिए कि उनका छोटा बच्चा कोकून से बाहर है और बड़ी दुनिया में खुद को आजमाना चाहता है। इस स्तर पर माता-पिता बच्चों को इस असाधारण परीक्षा का सामना करने में मदद कर रहे हैं। (मैकनी और रेन्क, 2008)।

माता-पिता को यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक बच्चा अद्वितीय है और जो एक बच्चे के साथ काम करता है वह दूसरों के साथ काम कर भी सकता है और नहीं भी। इसके लिए माता-पिता को अपने बच्चों को अच्छी तरह से जानना चाहिए। एरिक एरिकसन के अनुसार, पहचान बनाम भ्रमका भ्रम, मनोसामाजिक विकास के आठ चरणों में से पांचवां चरण है जो 12 और 19 की उम्र के बीच होता है। इस चरण के दौरान कशोरों को स्वयं और व्यक्तिगत पहचान की

भावना वक सत करने की आवश्यकता होती है। सफलता स्वयं के प्रति सच्चे रहने की क्षमता की ओर ले जाती है , जब क असफलता भूमिका भ्रम और स्वयं की कमजोर भावना की ओर ले जाती है। इस चरण के बाद के चरणों में , बच्चे में यौन पहचान की भावना वक सत होती है। ऐसे में यह भ्रम की स्थिति है। इन कशोरों का सही दिशा में पालन-पोषण करना माता-पता की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए क्योंकि वे इस दुनिया की भावी पीढ़ी हैं। माता-पता को जब भी उनकी आवश्यकता होती है, उनके लिए वहां रहना चाहिए और उनके लिए अदृश्य भी होना चाहिए क्योंकि वे इस अवधि के दौरान अधिक स्थान और गोपनीयता चाहते हैं। माता-पता को कभी-कभी दोस्त बनने की जरूरत होती है और कठिन समय में भी उनका मार्गदर्शन करना चाहिए। उन्हें बच्चों को यह समझने में मदद करनी चाहिए कि सीमाएँ क्या हैं और उन्हें इसे अपने लिए निर्धारित करने में मदद करनी चाहिए।

कशोर बच्चों के मनोवैज्ञानिक कल्याण पर पालन-पोषण का प्रभाव

पर्यावरण बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समृद्ध और अनुकूल वातावरण व्यक्ति के विकास को सकारात्मक तरीके से सुगम बनाता है। इसी तरह , यदि यह किसी व्यक्ति के विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है अर्थात् यदि वातावरण नीरस या नीरस है , तो व्यक्ति के व्यवहार को अस्वस्थ तरीके से आकार देने की संभावना है। घर पहला समाजीकरण एजेंट है और यह बच्चों के व्यक्तित्व को ढालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रारंभिक बचपन यानि शैशावावस्था में , परिवार के माध्यम से ही वे व्यवहार और आदतों के पैटर्न सीखते हैं। कुछ शुरुआती अनुभव बच्चों के मन पर हमेशा के लिए छाप छोड़ते हैं जो जीवन भर उनके व्यवहार को काफी हद तक प्रभावित करते रहते हैं। इस लिए यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि माता-पता का स्वभाव , व्यवहार, चरित्र और आपसी संबंध बच्चे के व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करते हैं। आधुनिक समय की समस्याओं के कारणों में से एक यह है कि बचपन के दिनों में कशोरों को कैसे पाला जाता है। यह माता-पता और एक-दूसरे और बच्चे के प्रति उनका व्यवहार है जो वास्तव में अंतिम उत्पाद का फैसला करता है। यानी अगर वह बिना ड्रग या आत्महत्या की मदद लिए एक असंतुष्ट युवा या सफलता और असफलता को समान आसानी से संभालने में सक्षम व्यक्ति बन जाएगा। आज की दुनिया में , कशोर बच्चों के माता-पता को अपने बच्चों के साथ मैत्रीपूर्ण और प्रेमपूर्ण संबंध बनाए रखना

चाहिए, ले कन साथ ही उन्हें उनकी निगरानी और मार्गदर्शन भी करना चाहिए। भले ही कशोर बच्चे स्वतंत्रता का प्रदर्शन कर सकते हैं, माता-पता को यह महसूस करना चाहिए कि इन बच्चों को अभी भी उनकी आवश्यकता है और जब भी उन्हें आवश्यकता हो, उन्हें उपलब्ध होना चाहिए। यह तभी कया जा सकता है जब माता-पता और बच्चे के बीच संचार चैनल मौजूद हो। यह संचार चैनल स्पष्ट होना चाहिए और माता-पता सक्रय श्रोता होने चाहिए। यह संचार चैनल सकारात्मक मान सक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की कुंजी है। कशोर बच्चे जो अपने माता-पता के साथ सहज और आसान संचार करने में सक्षम होते हैं, उनका मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य बेहतर होता है। उन्हें शारीरिक और मनोवैज्ञानिक शकायतें भी कम होती हैं। पूरे परिवार (माता-पता, भाई-बहन, दादा-दादी, वस्तारित परिवार) और दोस्तों को कशोर बच्चों के लए समर्थन के रूप में होना चाहिए क्यों कि ये बच्चे बहुत उथल-पुथल से गुजरते हैं। यदि इन युवाओं के लए समर्थन की संख्या अधिक है तो संभावना है कि वे सकारात्मक स्वास्थ्य का अनुभव करते हैं और यदि संख्या शून्य या बहुत कम है तो इसका इन बच्चों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है (मोल्चो एम एट अल (2007))।

इन बच्चों को जीवन के हर कोने से समर्थन और सकारात्मक प्रोत्साहन की जरूरत है। दोस्तों, परिवार, भाई-बहनों और शिक्षकों का निरंतर समर्थन इन युवाओं में बेहतर मनोवैज्ञानिक कल्याण को बढ़ावा दे सकता है। इससे पता चलता है कि कशोरों के स्वास्थ्य की देखभाल करने वाले पेशेवरों को न केवल स्वास्थ्य समस्याओं को सीधे संबोधित करना चाहिए बल्कि स्वास्थ्य को बढ़ावा देने वाले व्यवहारों के विकास में परिवार के प्रभाव पर भी ध्यान देना चाहिए। यूनिसेफ (2002) के अनुसार, युवा लोगों को सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करने में न केवल माता-पता सबसे महत्वपूर्ण लोग हैं; वस्तारित परिवार के सदस्य और स्कूल भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पर्याप्त संख्या में अध्ययनों से पता चला है कि कशोर जिस तरह से अपनी सामाजिक दुनिया से जुड़ते हैं, वह उनके स्वास्थ्य और विकास को प्रभावित करता है और उन्हें उच्च जोखिम वाले व्यवहारों से बचाता है।

निष्कर्ष

परिवार एक ऐसा स्थान है जहां माता-पिता या तो एक साथ या प्रत्येक अलग-अलग अपने बच्चों के विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। कई अध्ययनों में बच्चे के जीवन में पालन-पोषण के महत्व का उल्लेख किया गया है और कई अध्ययनों में पाया गया है कि बच्चों का मनोवैज्ञानिक कल्याण बच्चे के जीवन के वृद्धन पहलुओं को कैसे प्रभावित करता है। रॉसमैन और री (2005) के एक अध्ययन में पाया गया कि आधिकारिक पालन-पोषण ने पश्चिमी दुनिया के बच्चों को बेहतर अनुकूलन करने में मदद की और उन्हें कम आक्रामक पाया गया। साथ ही, उन्होंने पाया कि अधिनायकवादी पालन-पोषण ने उच्च शिक्षा की सुविधा प्रदान की, लेकिन बच्चों में आचरण की समस्याएँ भी पैदा कीं। उन्होंने पाया कि अनुमेय पालन-पोषण से बच्चों में चिंता का उच्च स्तर होता है और अवसाद और सामाजिक वापसी जैसी समस्याएँ भी होती हैं। चैन, डॉंग, और झोउ (1997) के एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि सत्तावादी पालन-पोषण ने शरणाग्र बच्चों में उच्च आक्रामक व्यवहार और कम सामाजिक योग्यता और शिक्षणक उपलब्धि को जन्म दिया। उन्होंने यह भी पाया कि आधिकारिक पालन-पोषण ने सामाजिक और स्कूल समायोजन को बढ़ावा दिया और बच्चों में समायोजन की समस्याओं को कम किया। इसी तरह, हिकमैन और क्रॉसलैंड (2005) के एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि आधिकारिक पालन-पोषण ने कॉलेज के छात्र की शिक्षणक उपलब्धि और कॉलेज में समायोजन में मदद की। लेकिन ऐसे अध्ययनों की कमी है जिन्होंने भारतीय कठोर बच्चों के मनोवैज्ञानिक कल्याण पर पालन-पोषण के प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया है। चूंकि माता-पिता अपने बच्चों की भलाई के लिए प्रमुख योगदानकर्ता हैं, वर्तमान अध्ययन को यह आकलन करने के लिए लिया गया था कि कठोर बच्चे अपने माता-पिता को कैसे समझते हैं और कठोर बच्चों के मनोवैज्ञानिक कल्याण पर कथित पारिवारिक शैलियों के प्रभाव का भी अध्ययन करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

भ आचार्य पी और प्रधान आरके। (2015) भारतीय कशोरों की कथत पैतृक पालन-पोषण शैली और सक्रय मुकाबला रणनीतियाँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल स्टडीज 7(2)। 180-194। डोई:10.5539/ijps.v7n2p180

कार्लो, जी., मैक गनले, एम., हेस, आर., बाटेनहोस्ट, सी., और वल्किंसन, जे. (2007) पारिवारिक शैली या व्यवहार? कशोरों के बीच पालन-पोषण, सहानुभूति और अभययोग व्यवहार। द जर्नल ऑफ जेनेटिक साइकोलॉजी, 168, 147-176। डोई:10.3200/जीएनटीपी.168.2.147-176

डी सूजा, जे.एफ., और पॉल, पी. (2013) कथत पैतृक पालन-पोषण शैली और सामाजिक क्षमता। जर्नल ऑफ द इंडियन एकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, 39, 103-109

दि मन्नीवा, जे., चेन, सी., ग्रीनबर्गर, ई., और गलरिवास, वी. (2004) पारिवारिक संबंध और कशोर मनोसामाजिक परिणाम: पूर्वी और पश्चिमी संस्कृतियों से निष्कर्ष निकालना। कशोरावस्था पर शोध जर्नल, 14, 425-447

डायनर, लुकास, शममैक, हेलीवेल जे। (2009) सार्वजनिक नीति ऑक्सफोर्ड के लिए कल्याण। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 39 (4): 391-406। [गूगल शास्त्री

एडवर्ड सी. चांग (2006) परफेक्शनिज्म एंड डाइमेंशन्स ऑफ साइकोलॉजिकल वेल-बीइंग इन ए कॉलेज स्टूडेंट सैंपल: ए टेस्ट ऑफ ए स्ट्रेस-मेडेशन मॉडल जर्नल ऑफ सोशल एंड क्लिनिकल साइकोलॉजी 25, 9, 1001-1022

ईसेनबर्ग मुझे, ओल्सन आरई, न्यूमार्क-स्जटेनर डी, स्टोरी एम, बियरिंगर एलएच। (2004) कशोरों के बीच पारिवारिक भोजन और मनोसामाजिक कल्याण के बीच संबंध। आर्क बाल रोग एडोलस्क मेड। ;158(8):792-796। डोई:10.1001/आर्कपेडी.158.8.792

एलसाबेता सैगोन, मारिया एल वरा डे कैरोली (2014) मध्य और स्वर्गीय कशोरों में मनोवैज्ञानिक कल्याण और लचीलापन के बीच संबंध, प्रोसी डया - सामाजिक और व्यवहार

वज्ञान, खंड 141 , पृष्ठ 881- 887 , आईएसएएन 1877-0428 , <https://doi.org/10.1016/j.sbspro.2014.05.154>